दैनिक जागरण

भोपाल, 14 सितंबर 2024

सत्यकथा

राजगढ़ : शादीशुदा प्रेमी संग भाग कर शादी करने की जिद में मारी गई कंचन

जिद्दी दीवानी

कमल खस

11 जून की सुबह के दस बजे का वक्त था जब राजगढ़ के कोतवाली थाना टीआई उमेश यादव पास के गांव के एक व्यक्ति ने लालपुरिया-भोकमपुर के बीच बटेड नाले में मानव कंकाल को कुत्तों द्वारा नोंचे जाने की खबर दी। मामला गंभीर था इसलिए एसपी राजगढ़ वीरेन्द्र सिंह को तत्काल कंकाल मिलने की खबर देकर टीआई श्री यादव अपने साथ एसआई अनिल राजौरिया एवं मोनिका राय के अलावा दलबल लेकर मोकनपुर से लगभग ढेड किलोमीटर दूर बटेड नाले पर जा पहुंचे।

कालू ने पास के गांव से अपने माता-पिता के साथ उसके खेत में काम करने आई कंचन से शादी का वादा कर अपनी हवस का शिकार बना लिया था। तब कालू को कहां पता था कि कंचन हद के दर्जे की सुंदर ही नहीं जिद्दी भी है।

फोन पर सूचना देने वाला व्यक्ति पास के गांवों में भी संभवतः कंकाल पड़े होने की खबर फैला चुका था इसलिए पुलिस के पहुंचने से पहले की बड़ी संख्या में गांव वाले मौके पर जमा हो चुके थे। मौके पर नाले के समीप पड़े मानव कंकाल को कुत्ते और जंगली जानवर लगभग पूरी तरह चट कर चुके थे। कंकाल के पास एक लेड़ीज सेंडिल, साड़ी, फटा हुआ ब्लाऊज और लंबे बालों का गुच्छा पड़ा था जिससे टीआई श्री यादव ने इतना अनुमान तो लगा लिया कि कंकाल किसी महिला का हो सकता है। मौके पर सामने आए हालत के बारे में टीआई द्वारा उच्चाधिकारियों को खबर करने पर तत्काल एफएसएल की टीम भी मौके पर पहुंच गई। शव के पास एक साड़ी और सेंडिल के अलावा ऐसा कुछ पुलिस को हासिल नहीं हुआ जिससे मरने वाले की पहचान की जा सके। रही भीड़ की बात तो कंकाल को देखकर कोई कैसे कह सकता था कि शव किसका है।

पुलिस ने कंकाल बरामद कर उसे पीएम के लिए भोपाल भेजने के साथ आसपास के सभी थानों को कंकाल और उसके साथ मिले सामान की सूचना दे दी। जिले भर के थानों में दर्ज गुमशुदा लोगों खासकर गुम महिलाओं की जानकारी भी जुटाई जाने लगी। लेकिन इससे कुछ खास हाथ नहीं लगने पर टीआई श्री यादव ने साड़ी और सेंडिल की तस्वीर सोशल मीडिया पर वायरल करने के युक्ति सोचकर मोबाइल जेब से निकाला ही था कि तभी थाने के संतरी ने आकर उन्हें सूचना दी कि पास के गांव से एक पति-पत्नी अपनी गुम हुई 22 वर्षीय बेटी की रिपोर्ट दर्ज करवाने आए है।

यह खबर कंकाल की पहचान के लिए अंधेरे में हाथ-पैर मार रही पुलिस के लिए उम्मीद की किरण जगाने वाली थी। इसका सबसे बड़ा कारण यह भी था कि थाने आए फरियादी जिस लालपुरिया गांव से आए थे वह उस स्थान से ज्यादा दूर नहीं था जहां से कुछ ही घंटे पहले श्री यादव ने कंकाल बरामद किया था।

इसलिए टीआई श्री यादव ने तुरंत ही दोनों पति-पत्नी को अपनी केबिन में बुलाकर उनसे पूरी बात बताने को कहा। शेष पृष्ठ 4 पर...

बड़ी जोत के किसान का बेटा होने के कारण कालू सिंह किशोर उम्र में भी खेतीहर मजदूरों पर अपनी रईसी और दबंग प्रवृति दिखाने लगा था। लेकिन जवानी और पैसे के नशे में उस वक्त कालू सिंह हो इस बात का जरा भी इल्म नहीं था कि उसकी यह आदत एक रोज उसे सलाखों के पीछे तक ले जाएगी।

demo pic.

उज्जैन

तांत्रिक से इलाज करवाने के बहाने गर्भवती बहू से किया दुराचार

चालबाज ससुर

गांव में पत्नी के साथ पिता का अश्लील वीडियो वायरल होने की बात पर बेटा कैसे भरोसा करता। लेकिन जब सच्चाई सामने आई तो बेटे ने पिता को दोषी मानने के बजाए गर्भवती पत्नी को ही घर से निकाल दिया।

पिछले साल नवंबर महीने की बीस तारीख को जिले के भाटपचलाना थाने से आई डायरी पर सरसरी नजर डाल रहे भेरूगढ़ थाना टीआई प्रवीण कुमार पाठक उस समय चौंक गए जब उन्हें डायरी की इबारत से पता चला कि बलात्कार संबंधी इस मामले में आरोपी कोई और नहीं 26 वर्षीय युवती मालती का ससुर है तो सामाजिक पतन को देखकर उनका मन गुस्से से भर उठा।

पाप पराये के बजाए कोई अपना करे तो पीड़ित का दर्द और भी बढ़ जाता है इसलिए उन्होंने तुरंत पचलाना थाना इलाके के एक गांव में रहने वाले 65 वर्षीय जगदीश परमार के खिलाफ बलात्कार का मामला दर्ज कर एक टीम की मदद से उसे गिरफ्तार करवा लिया। पूछताछ में जगदीश ने पाप के आरोप से मना किया लेकिन उसके पाप की गवाही तो गांव में वायरल हुआ वीडियो खुद दे रहा था जिसमें वह अपनी गर्भवती बहू के साथ बलात्कार करते दिखाई दे रहा था। इसलिए पुलिस ने उसकी एक नहीं सुनी और मेडिकल जांच के बाद उसे अदालत में पेश किया जहां से उसको जेल भेज दिया गया। जिसके बाद यह कहानी कुछ इस तरह से सामने आई।

उज्जैन जिले के ही एक गांव से कोई छह साल

पेट में छह माह का गर्भ और कमर में बेशुमार दर्द लेकर घूम रही गुलाबो को कहां पता था कि पिता जैसा उसका ससुर कमर दर्द दूर करने के बहाने उसे जिंदगी भर का दर्द दे देगा।

पहले जब गुलाबो (बदला नाम) ब्याह कर भाटपचलाना पहुंची तो उसके कुछ ही दिनों के बाद गुलाबो की सुंदरता छोटे से गांव में चर्चा का विषय बन गई। गुलाबो इन सब बातों पर ध्यान दिए बिना अपनी ससुराल और पति की सेवा में पूरे मनोयोग से समर्पित रही। पति भी गुलाबो के रुप और व्यवहार दोनों का मुरीद था सो अपनी पत्नी पर भरपूर प्यार लुटाने लगा जिसके चलते शादी के साल भर बाद ही गुलाबो एक बेटे की मां बन गई। परिवार में सब कुछ भली प्रकार चल रहा था कि अचानक कोरोना के भूत ने गुलाबो की सास को लील लिया।

मां की मौत से पिता के मन को होने वाले दुख को समझते हुए गुलाबो के पति और देवर ने खेती किसानी का पूरा भार अपने कंधो पर ले लिया। वहीं घर परिवार की जिम्मेदारी गुलाबो ने अपने नाजुक कंधो पर उठा ली। जिससे परिवार धीरे-धीरे फिर पटरी पर दौड़ने लगा। इसी बीच 2022 के फरवरी महीने में गुलाबो एक बार फिर उम्मीद से हो गई। बेटा चार साल का हो चुका था इसलिए दूसरी संतान आने की आहट से गुलाबो और उसका पति दोनों भी बेहद खुश थे।

सास की मृत्यु के बाद घर की पूरी जिम्मेदारी गुलाबो पर थी इसलिए जैसे जैसे गर्भ का समय बढ़ता गया वैसे-वैसे गुलाबो का शरीर मेहनत से टूटने लगा। जिससे चार महीने बाद अचानक उठते-बैठते गुलाबो की कमर दर्द से टूटने लगी। गुलाबो जानती थी कि उसका पति भी दिन भर खेतों में मेहनत करता है इसलिए वो परेशान न हो इसलिए कुछ दिनों तक तो चुपचाप दर्द सहती रही लेकिन जब दर्द हद से ज्यादा बढ़ गया तो उसने पति से इस बारे में बात की।

खेतों में काम का समय होने के कारण पति और देवर उसे लेकर अस्पताल जाने का समय नहीं निकाल पा रहे थे इसलिए एक रोज पति से अपने पिता को गुलाबो के कमर में दर्द होने की बात बताते हुए उसे अस्पताल से दवा दिलवाने को कहकर छोटे भाई को लेकर खेत चला गया।

इधर बेटे द्वारा बहू को अस्पताल ले जाने की बात सुनकर गुलाबो का ससुर जगदीश परमार खुशी के मारे उछल पड़ा। वास्तव में जगदीश परमार एक नंबर का लंपट और कामुक व्यक्ति था। इसलिए पत्नी की मृत्यु के बाद नारी संग की चाहत के लिए तड़प रहा जगदीश अपनी बहू गुलाबो पर बुरी नजर रखने लगा था। गुलाबो को इस बात का जरा भी अंदाजा नहीं था कि जब वो काम में जुटी रहती है तब पिता समान उसका ससुर मौका पाकर उसके कपड़ों में ताकां-झांकी किया करता है। इसलिए दोपहर में जब जगदीश ने उससे कहा कि आजकल के लड़के तो कुछ समझते नहीं हैं इसलिए डॉक्टरों के पास भागते हैं। इतना भी नहीं जानते कि ऐसे में अंग्रेजी दवा खाने से पेट में बच्चे को नुकसान हो सकता है। तुमने मुझे बताया होता तो अभी तक कब का तुम्हारा कमर दर्द छू हो गया होता। मैं उज्जैन में एक तांत्रिक बाबा को जानता हूं। उनसे झाड़ा करवाए देता हूं उनकी एक फूंक में दर्द चला जाएगा।

अब ससुर की बात सुनकर भला गुलाबो क्या कहती। इसलिए उनके कहने पर वह चुपचाप उनके साथ मोटर साइकल पर बैठकर उज्जैन आ गई यहां एक बाबा के पास ले जाकर जगदीश ने उसका झाड़ा करवाया और फिर गांव वापस जाते समय रास्ते में ढाबला फंटा एवं रुई के बीच में पड़ने वाले जंगल के पास मोटर साइकल रोककर सड़क के किनारे खड़ी कर गुलाबो को साथ आने का कहकर उसे अंदर जंगल में ले गया। गुलाबो को कुछ समझ नहीं आ रहा था लेकिन वह ससुर से कुछ पूछ भी नहीं पा रही थी। जंगल में अंदर ले जाने के बाद जगदीश परमार ने अपने कंधे पर टंगा गमछा जमीन पर बिछाकर गुलाबो को उस पर लेटने को कहा।

ससुर के सामने घूंघट न उठाने वाली गुलाबो यह सुनकर चौंकी तो जगदीश बोला मुसीबत में मर्यादा नहीं देखी जाती। मुझसे बाबा ने तुम्हारे कमर की मालिश करने को कहा है इसलिए उनकी बात मानना जरूरी है।

पति कर रहा दूसरी शादी पत्नी भोग रही कष्ट

पूरे मामले में पीड़ित पत्नी ने अपनी इज्जत ही नहीं खोई बल्कि उसका पूरा भविष्य अंधेरे में डूब गया है। जानकारी के अनुसार मायके में दूसरे बेटे का जन्म

देने के बाद गुलाबो मेहनत मजदूरी कर अपना और बच्चों का पेट भर रही है। जबकि आरोपी ससुर और जमानत मिल जाने से वह जेल से बाहर आ गया है। लोगों में चर्चा है कि आरोपी ससुर, गुलाबो से रिपोर्ट दर्ज करवाने का बदला लेने अपने बेटे की दूसरी शादी करने की तैयारी कर रहा है।

ससुर की बात सुनकर गुलाबो कांप उठी। कोई रास्ता न देख उसने धीरे से कहा कि घर पर चलकर देख लेंगे। यह सुनकर जगदीश बोला मुझे क्या पागल कुत्ते ने काटा है जो घर पर यह काम हो सकता तो तुम्हें यहां जंगल में लेकर आता। बाबा ने इसी जगह पर मालिश करने को कहा है। किसी ने ऊपरी हवा भेजी है वह शरीर से निकलकर जंगल में चली जाएगी। घर पर इलाज किया तो वह ऊपरी हवा घर में ही भटकती रहेगी। इसलिए चुपचाप लेट जाओ।

आमतौर पर ससुर इतने सालों में कभी ऐसी तेज आवाज में नहीं बोला था इसलिए गुलाबो डर के मारे चुपचाप गमझे पर बैठकर पीठ ऊपर की तरफ करके लेटने लगी तो जगदीश ने टोका ऐसे नहीं पेट दबेगा। सीधी लेटो में सब कर लूंगा।

गुलाबो ने पुलिस को बताया कि मैंने अपना घूंघट खींचकर लंबा किया और आंखे बंद कर गमझे पर लेट गई तो ससुर मेरे पास बैठकर दोनों हाथ कमरे में डालकर मालिश करने लगा इसी बीच उसने मेरा नाड़ा खोला तो मैंने चौंक कर उसके हाथ पकड़ लिए। तो वह बोला हाथ कमर में ठीक से नहीं चल रहा है। यह पूजा का काम है इसमें रुकावट मत डालो। उसने मेरे हाथ हटा दिए और फिर कमर में नीचे तक हाथ घुमाने के बाद मुझे करवट लेने को कहा और खुद मेरे सामने की तरफ लेट गया तथा मेरी साड़ी नीचे सरका दी तब मुझे मालूम चला कि मालिश के दौरान मेरे घूंघट में होने का फायदा उठाकर वह अपनी कमर के नीचे के कपड़े पहले ही हटा चुका था।

गुलाबो ने बताया कि इस बात का अहसास होते ही उसने ससुर की पकड़ से निकलने की कोशिश की लेकिन उसके लाख प्रयास और हाथ-पैर जोड़ने के बाद भी ससुर नहीं माना एवं उसने जंगल में उसके साथ बुरा काम किया। इसके बाद उसने धमकी दी कि अगर मैंने यह बात पति को बताई तो वह पति की हत्या करवा देगा। इसलिए डर के मारे में चुप रही।

इसके बाद मैं घर में ससुर से बचकर रहने लगी। जबकि वह मेरा बहुत ध्यान रखने लगा था। इस दौरान उसकी बातों से मैं समझ चुकी थी कि बच्चे का जन्म होने के बाद ससुर दिन भर हम दोनों के घर में अकेले रहने का फायदा उठाने के ठानकर बैठा है। वह अपनी बातों में ऐसा इशारा भी कर चुका था।

मगर इसी बीच अचानक गांव में गुलाबो के साथ ससुर के पाप का वीडियो वायरल हो जाने से पूरे गांव में हल्ला मच गया। इसकी जानकारी लगने पर गुलाबो के पति ने अपनी पत्नी को ही दोषी माना और उसे मारपीट कर घर से निकाल दिया। जिससे वह मायके में आकर रहने लगी। इस दौरान उसके एक रिश्ते के भाई ने पूरी बात जानकर गुलाबो को कानून की मदद लेने की सलाह दी जिससे बलात्कारी ससुर हो टीआई प्रवीण पाठक की टीम ने सलाखों के पीछे पहुंचा दिया।

कथा पुलिस सूत्रों पर आधारित।

वीडियो वायरल होने पर खुला राज

जिस समय आरोपी ससुर जगदीश परमार जंगल में अपनी बहू के साथ बलात्कार कर रहा था तब जंगल में मौजूद किसी व्यक्ति ने यह नजारा देखकर इसका वीडियो बनाकर वायरल कर दिया था। ससुर बहू का यह वीडियो कुछ दिनों बाद पूरे गांव भर के लोगों के पास पहुंच जाने से गांव में गुलाबो और जगदीश परमार की सेक्स फिल्म की चर्चा होने लगी। जिसकी जानकारी गुलाबो के पति को लगने पर उसने मारपीट कर गर्भवती पत्नी को घर से निकाल दिया। जिसके बाद वह गांव वालों की मदद से अपने मायके पहुंची। जिसके बाद रिश्ते के एक भाई की मदद से उसने भाटपचलाना थाने जाकर रिपोर्ट दर्ज करवा दी।

आरोपी ससुर जगदीश परमार ।

ग्वालियर

दो नाव में सवार पति ने दोस्त को सुपारी देकर करवा दी दूसरी बीवी की हत्या

मुस्कान, आलोक का पहला प्यार मगर दूसरी बीवी थी। कभी प्रेम में आकंठ डूबे आलोक और मुस्कान एक दूसरे से शादी करना चाहते थे। लेकिन दूसरे युवक के साथ मुस्कान की शादी के बाद आलोक ने भी एक अन्य युवती से शादी कर ली थी। मगर शादी के चंद माह ही मुस्कान जब अपने पति को तलाक देकर एक बार फिर आलोक के सामने आकर खड़ी हो गई तो आलोक ने चोरी छुपे मुस्कान को अपनी दूसरी बीवी बना लिया था।

all demo pic.

पहला प्यार दूसरी बीवी

.....

बेरोजगार आलोक दो नाव की सवारी का लुफ्त तो पूरा-पूरा उठा रहा था लेकिन प्रेमिका से बीवी बनी मुस्कान के खर्चों ने उसकी हालत पतली कर रखी थी। इसलिए जब उसे कोई और रास्ता नहीं सूझा तो एक रोज उसने अपने दोस्त को सुपारी देकर मुस्कान की हत्या करवा दी।

.....

13 अगस्त की शाम का वक्त था। मंगलवार का दिन होने के कारण ग्वालियर में दतिया रोड़ स्थित जौरासी हनुमान मंदिर में हर मंगलवार की तरह उस रोज भी भक्तों का तांता लगा हुआ था। ऐसे में भीड़ से दर्शन कर बाहर निकले दो युवकों के साथ एक खूबसूरत युवती ने माथे से पसीना पोंछकर हाथ में लिया प्रसाद अपने साथ बाहर आए युवकों के हाथ में देकर बाकी का प्रसाद आसपास के खड़े अन्य श्रृद्धालुओं में वितरित कर थोड़ा सा प्रसाद खुद श्रृद्धा भाव से ग्रहण कर एक बार फिर पीछे मुड़कर भगवान के मंदिर को प्रणाम किया।

निरंजन शर्मा, एडी.एसपी

थोड़ी ही देर बाद एक्टिवा पर अपने भाई संजेश के साथ सवार होकर वह युवती मुस्कान ग्वालियर की तरफ चल दी। साथ में दूसरी मोटर साइकल पर मुस्कान का पति आलोक सवार था। दोनों गाड़ियां बराबर से सड़क पर दौड़ रही थी तभी अचानक गार्डन सिटी विक्की फैक्ट्री के पास पीछे से आए एक अन्य चार पहिया वाहन ने एक्टिवा पर सवार भाई बहन को रौंद दिया और तेजी से मौके से भाग निकला। यह देखकर आलोक ने उस वाहन का पीछा किया लेकिन जल्द ही वह सड़क पर घायल पड़ी अपनी पत्नी और साले के पास लौट आया।

इधर घटना की जानकारी झांसी रोड़ थाना टीआई मंगल सिंह को मिली तो वह दलबल लेकर मौके पर पहुंच गए और दोनों घायलों को उपचार के लिए अस्पताल भेज दिया। मौके पर मौजूद आलोक ने पुलिस को बताया कि मंगलवार होने के कारण वे तीनों मंदिर से दर्शन कर वापस आ रहे थे कि तभी मौके पर एक लोडिंग वाहन ने मुस्कान की एक्टिवा को टक्कर मार दी। जिससे उसकी पत्नी और साला संजेश घायल हो गए। चूंकि आलोक दूसरी बाइक पर सवार था इसलिए वह चपेट में आने से बच गया। पुलिस ने मर्ग कायम कर जांच में ले लिया।

इसी बीच रात के समय उपचार के दौरान अस्पताल में मुस्कान की मौत हो गई।

सुबह होश आने पर संजेश ने भी बताया कि वह अपने जीजाजी और बहन के साथ मंदिर से लौट रहा था कि रास्ते में किसी कार ने उसे टक्कर मार दी।

चूंकि आलोक जो घटना के समय दोनों के साथ अलग मोटर साइकल पर चल रहा था, ने अपने बयान में बताया था कि किसी लोडिंग वाहन ने टक्कर मारी थी जबकि संजेश किसी कार के द्वारा टक्कर मारा जाना बता रहा था। अपितु उसका यह भी कहना था कि एक्सीडेंट के बाद वह उझल कर दूर जा गिरा था इसलिए टक्कर मारने वाले वाहन को ठीक से नहीं देख पाया था।

बहरहाल इस बीच मामला संदिग्ध हो जाने पर एडएसपी निरंजन शर्मा ने टीआई मंगल सिंह और एसआई प्रकाश सिंह चौहान, अवधेश कुशवाहा, आशीष शर्मा की चार टीमें जांच के लिए गठित कर दी। टीम ने घटना स्थल के पास लगे सीसीटीवी कैमरे खंगाले लेकिन घटना के समय मौके पर कोई लोडिंग वाहन दिखाई नहीं दिया। अपितु एक ईकोस्पोर्टस कार जरूर इनके पीछे आती दिखाई दी। इसी बीच कुछ लोगों ने बताया कि उस दिन शाम को घटना स्थल के पास एक ईकोस्पोर्टस कार बिजली के खंबे से टकराई थी।

.....

यू-ट्यूब और बेब सीरीज पर क्राइम स्टोरी देखकर आलोक ने इतनी सफाई से हत्या की योजना बनाई थी कि दस दिन तक पुलिस मुस्कान की मौत को सड़क हादसा ही मानकर चलती रही।

.....

जाहिर सी बात है कि संजेश भी कार का शक व्यक्त कर रहा था और एक कार उसी समय खंबे से टकराई थी। सीसीटीवी कैमरे में भी कार ही दिखाई दे रही थी न कि लोडिंग गाड़ी। इससे आलोक शक के घेरे में आ गया कि उसका तो एक्सीडेंट भी नहीं हुआ। मौके पर मौजूद भी था फिर उसे कार लोडिंग गाड़ी कैसे दिखाई दी।

इसलिए पुलिस ने एक बार फिर आलोक से पूछताछ की तो उसने कहा कि हां हो सकता है कार ने टक्कर मारी हो। वह ठीक से देख नहीं पाया। इस बयान से पुलिस का शक गहरा गया। उसने आलोक की कुंडली बनाई तो पता चला कि मुस्कान आलोक की दूसरी पत्नी थी जिसके साथ उसने चुपचाप लव मैरिज की थी। उसकी पहली पत्नी आलोक के पैतृक गांव मुरैना के बागचीनी में ससुराल में रहती है। आलोक के मोबाइल की काल डिटेल निकाली जिसमें पता चला कि घटना के दिन उसने अपने एक दोस्त से फोन पर कई बार बात की थी। सबसे बड़ी बात तो यह कि जिस दोस्त से उसने बात की थी उसके पास ईकोस्पोर्टस कार भी है। इससे पुलिस के सामने सारी कहानी साफ हो गई। जिससे उसने आलोक को हिरासत में लेकर सख्ती से पूछताछ की तो आलोक ने मान लिया कि उसने अपने दोस्त को ढाई लाख की सुपारी देकर मुस्कान का कत्ल करवाया था क्योंकि वह उसके खर्चों से तंग आ चुका था।

पुलिस ने छापामारी कर आलोक के दोस्त को भी गिरफ्तार कर लिया जो घटना के समय कार चला रहा था जबकि कार में बैठे दो दोस्त जो इस योजना में शामिल थे फरार होने में कामयाब हो गए। इसके बाद यह कहानी इस प्रकार सामने आई।

शेष पृष्ठ 7 पर...

इसलिए कार को बताया लोडिंग वाहन

अरोपी पति अलोक।

घटना के बाद आलोक ने पुलिस को बताया था कि लोडिंग गाड़ी ने मुस्कान को टक्कर मारी है। ऐसा उसने इसलिए किया ताकि पुलिस कार के बजाए लोडिंग खोजने में लगी रहे। लेकिन सीसीटीवी में कोई लोड़िग वाहन घटना के समय मौके पर नहीं दिखा। दूसरे ईकोस्पोर्टस कार में सवार सुपारी किलर ने जब मुस्कान को टक्कर मारी तब संतुलन बिगड़ जाने से वह पास के एक खंबे से भी टकराई थी। इसकी जानकारी पुलिस को लगने पर जब आलोक से दूसरी बार पूछताछ हुई तो उसने कहा कि उसने टक्कर मारने वाली गाड़ी को ठीक से नहीं देखा था। इसी बात पर पुलिस को शक हुआ जिससे पूरी कहानी खुल गई।

पहला प्यार मगर दूसरी बीवी थी मुस्कान

मृतका पत्नी मुस्कान।

आलोक और मुस्कान की प्रेम कहानी 2017 में एक साथ पीएससी की कोचिंग करते शुरू हुई थी। लेकिन कोविड़ काल में बिछुड़ जाने के बाद दोनों की शादी अलग-अलग हो गई थी। मगर जब मुस्कान ने अपने पति से तलाक ले लिया तो आलोक ने चुपचाप मुस्कान से दूसरी शादी कर उसे ग्वालियर में रख लिया था जबकि उसकी पहली पत्नी मुरैना में आलोक के माता-पिता के साथ रहती थी।

दस दिन तक पुलिस एक्सीडेंट मानती रही

एडीशनल एसपी निरंजन शर्मा का कहना है कि आरोपी ने क्राइम सीरियल देखकर बहुत शातिर योजना बनाई थी जिससे पहले दस दिन तक पुलिस भी इस एक्सीडेंट मानती रही लेकिन सीसीटीवी में लोड़िग गाड़ी दिखाई न पड़ने से जांच की दिशा बदली और आरोपी गिरफ्त में आ गया।

...पृष्ठ 1 से जारी

राजगढ़ का चर्चित कंचन हत्याकांड

परिवार के साथ मृतका कंचन

इस पर उन्होंने बताया कि वह लालपुरिया गांव के रहने वाले खेतीहर मजदूर हैं। उनकी तीन में से एक बड़ी संतान 20 वर्षीय बेटी कंचन (बदला नाम) पिछले 4 जून से अचानक की घर से लापता है। पति-पत्नी कंचन की गुमशुदगी दर्ज करवाने हफ्ते भर बाद आए थे। इसलिए जब टीआई ने उनसे रिपोर्ट करने में देरी का कारण पूछा तो उनका कहना था साहब जवान बेटी का मामला था। बाहर खबर न फैले इसलिए हम चुपचाप ही उसका पता लगा रहे थे। हमने कुछ ही दिन पहले उसकी सगाई कर दी थी इसलिए हम नहीं चाहते थे कि उसके गुम हो जाने की खबर लड़के वालों तक पहुंचे।

फिर आज क्यों आए हो रिपोर्ट दर्ज करवाने, अब लड़के वालों को खबर नहीं होगी क्या? श्री यादव ने उनका मन टटोलने का प्रयास करते हुए उनसे पूछा। वास्तव में श्री यादव को इस बात का शक हो चुका था कि थाने आए पति-पत्नी कंकाल मिलने की खबर पाकर ही यहां तक आए हैं। श्री यादव का शक सच निकला उनकी बात सुनकर पति-पत्नी ने एक दूसरे की तरफ देखा फिर कुछ डरते हुए पति ने कहा दरअसल साहब हमने सुना है कि गांव के पास नाले में कोई लाश मिली है। कुछ लोगों ने हमे बताया कि उसके पास जो साड़ी मिली है वैसी साड़ी मेरी बेटी भी पहनती थी इसलिए हमें लगा कि कहीं ऐसा तो नहीं कि हमारी बेटी हमें छोड़कर चली गई हो।

यह सुनकर टीआई श्री यादव ने कंकाल के पास मिली साड़ी और अन्य सामान उनको दिखाया तो सारा कुछ देखते ही मां ने उसे पहचान कर रोना शुरू कर दिया। उसका कहना था कि यह साड़ी, सेंडिल सब उसकी बेटी की है वह जिस दिन गायब हुई थी उस दिन यही साड़ी पहने थी।

शव की शिनाख्त लगभग हो चुकी थी। इसलिए इस बात की जानकारी उच्चाधिकारियों को देकर टीआई श्री यादव ने जल्द ही आगे की जांच शुरू कर दिया। दो दिन बाद भोपाल भेजे गए कंकाल की पीएम रिपोर्ट में भी कंकाल किसी युवा महिला का होने से पहचान का मामला और साफ हो गया। इसके अलावा पहचान पुख्ता करने के लिए माता-पिता के रक्त का नूमना भी कंकाल के साथ डीएनए मिलान के लिए भेज दिया गया। वहीं एसपी राजगढ़ श्री सिंह ने टीआई उमेश यादव के नेतृत्व में एसआई अनिल राजौरिया, एसआई मोनिका राय, एएसआई मोहन सिंह सोंधिया, प्रधान आरक्षक शादाब खान एवं आरक्षक ललित, इन्द्रपाल और शक्ति सिंह आदि की एक टीम गठित कर दी।

जिसके बाद जांच में तेजी लाते हुए पुलिस ने कंचन के माता-पिता ने विस्तार में पूछताछ की जिसमें उन्होंने लालपुरिया से दो किलोमीटर दूर बसे गांव दलेलपुरा में रहने वाले कालू सिंह पर बेटी की हत्या का शक जाहिर किया। उनका कहना था कि कंचन का कालू सिंह से प्रेम मोहब्बत का रिश्ता बन गया था। इसलिए ऊंच-नीच न हो जाए इसी भय से उन्होंने बेटी की सगाई कर दी थी और जल्द ही वे उसकी शादी करने की तैयारी कर रहे थे। माता-पिता ने कालू सिंह पर शक जाहिर किया तो अगले दो दिन बाद ही 13 जून को पुलिस ने कालू सिंह को थाने बुलाकर उससे पूछताछ की। जिसमें उसने खुद को बेकसूर बताया साथ ही साथ कंचन के साथ अपने प्रेम प्रसंग की बात को भी उसने झूठ बतलाया। टीआई श्री यादव जानते थे कि बिना आग के धुंआ नहीं उठता। इसलिए खुद कंचन के माता-पिता की कालू के साथ अपनी बेटी के संबंध होने की बात कह रहे है तो बात गलत नहीं हो सकती। इसलिए कंचन से अपनी दोस्ती की बात गलत बताने से कालू उनकी शक के दायरे में आ गया।

इसलिए उन्होंने कालू के गांव में अपने मुखबिर इस बात का पता लगाने के लिए छोड़ दिए कि आखिर कालू और कंचन के इश्क की बात में कितनी सच्चाई है। तो दूसरी तरफ पुलिस उसे बार-बार थाने बुलाकर पूछताछ करने लगी। दरअसल एक तो पुलिस उसके बयानों का अंतर देखना चाहती थी दूसरे पुलिस जानती है कि कोई व्यक्ति अगर सचमुच ही आरोपी है तो अपनी बातों में कहीं न कहीं ऐसी गलती कर जाता है कि पुलिस के सामने पूरी कहानी साफ हो जाती है।

बहरहाल मुखबिरों से जानकारी मिल चुकी थी कि कंचन और कालू के इश्क की बात सोलह आने सच है। जिसे जानने के बाद टीआई श्री यादव ने कालू के मोबाइल की काल डिटेल निकाली जिसमें पता चला कि 4 जून को जिस रोज कंचन घर से लापता हुई थी उस रोज रात के समय कालू का मोबाइल कंचन के घर की लोकेशन में था। इसलिए जब कालू पर शक पूरी तरह से गहरा गया तो टीआई श्री यादव ने सामने आई पूरी जानकारी एसपी राजगढ़ को देकर 11 जुलाई के रोज कालू को पूछताछ के लिए एक बार फिर थाने बुलाकर उससे पहले तो यहां वहां की बातें की फिर अचानक टीआई ने उससे पूछा कि 4 जून की रात में तुम कंचन के गांव में क्या करने गए थे।

कौन, मैं तो अपने एक दोस्त की शादी में गया था।

मान लिया कि तुम शादी में गए थे। लेकिन उस रात क्या तुम कंचन के गांव गए थे। टीआई ने उससे सख्त शब्दों में पूछा। इस पर कालू द्वारा इंकार करने पर पुलिस ने उसके साथ अपनी भाषा में पूछताछ करनी शुरू कर दी। जिससे थोड़ी ही देर में रटे हुए तोते की तरह कालू ने कंचन की हत्या कर लाश को ठिकाने लगाने की गरज से नाले में फेंकने की बात स्वीकार कर कंचन का गला घोटने में उपयोग की गई रस्सी भी बरामद करवाते हुए पूरी कहानी सुना दी।

कालू सिंह के पिता के पास 20 बीघा जमीन होने के कारण उनकी गिनती इलाके के संपन्न किसानों में होती है। कालू सिंह अपने पिता का बड़ा बेटा है इसलिए बचपन में मिले जरूरत से ज्यादा लाड़-प्यार के चलते वह छोटी उम्र में बड़ों के खेल सीख गया था।

केवल पांच महीने पहले बने थे संबंध

पुलिस गिरफ्त में आरोपी कालू व मृतका कंचन(इंसेट)।

पांच माह पहले पहली बार कंचन के माता-पिता कंचन और दोनों छोटे बेटों को लेकर इस साल कालू के खेतों में फसल काटने आए थे। जिसका फायदा उठाकर कालू सिंह ने शादीशुदा होने के बाद भी कंचन के साथ शादी करने का वादा कर उसके साथ संबंध बना लिए थे। कालू ने पुलिस को बताया कि इसी दौरान उसकी कंचन के साथ दोस्ती हो गई थी। काम खत्म होने के बाद कंचन अपने गांव जाकर पहले तो अपनी एक सहेली के फोन से कालू सिंह से बात करती थी बाद में कालू सिंह ने ही उसे एक फोन खरीदकर दे दिया था।

जिद्दी दीवानी

तीन दिन और रात खेत में बनी टपरी में कालू के साथ छुपकर रह रही कंचन, कालू से तत्काल शादी करने की जिद कर रही थी। जिससे डर कर शादीशुदा कालू ने कंचन की हत्या कर दी।

दरअसल हर साल फसल पकने पर कालू सिंह के पिता फसल के मौसम में मजदूरों को काम पर लगाते थे। यह मजदूर अक्सर सपरिवार आते हैं जिनमें उनके बच्चे भी साथ होते हैं। माता-पिता दिन भर खेतों में काम करते हैं जबकि खेतों के पास बने अस्थाई डेरों में उनके बच्चे अकेले रहते हैं। बताते हैं कि कालू इसका फायदा उठाकर मजदूरों के साथ आई किशोर लड़कियों के आसपास मंडराता रहता था। यह देखकर कालू के पिता उसका मकसद समझ गए इसलिए उन्होंने जवान होते ही कालू सिंह की शादी करवा दी।

शादी के बाद कुछ समय तक तो कालू अपनी पत्नी में ही खोया रहा लेकिन जैसे ही उसकी पत्नी एक बच्चे की मां बनने के बाद घर गृहस्थी में रमी कालू फिर घर के बाहर मौके तलाश करने लगा। वास्तव में कालू सिंह का मानना था कि गरीब मजदूरों की बेटियां इतनी सीधी होती है कि वे किसी भी बात का विरोध नहीं कर पाती। लेकिन उसे इस बात का अंदाजा नहीं था कि मजदूरों के घर में कंचन जैसी जिद्दी लड़कियां भी जन्म लेती है।

कंचन, कालू सिंह के गांव दलेलपुर से महज दो किलोमीटर दूर बसे लालपुरियां गांव में रहने वाले एक खेतीहर मजदूर के घर में पैदा हुई। कंचन बचपन से ही जितनी सुंदर थी उतनी ही जिद्दी भी थी। कंचन के माता-पिता भी फसल के टाइम पर आसपास के गांव में बड़े किसानों के खेतों पर परिवार सहित मजदूरी करने जाते थे। धीरे-धीरे कंचन भी काम में हाथ बंटाने लायक हुई तो वह डेरों पर रहने के बजाए माता-पिता के साथ खेतों में काम करने लगी थी। संयोग से पांच माह पहले इस साल फसल के वक्त पर कालू सिंह के पिता ने कंचन के पिता को अपनी फसल काटने का ठेका दिया। जिससे फसल पकते ही कंचन के पिता परिवार के पांचों लोगों को लेकर फसल काटने के लिए कालू सिंह के खेतों पर जाने लगे।

फसल पकने पर कालू सिंह अक्सर खेतों में ही डेरा डाले रहता था इसलिए जब उसकी नजर अपने माता-पिता और दो छोटे भाईयों के साथ फसल काटने आई कंचन पर पड़ी तो वह उसकी सुंदरता को देखकर होश खो बैठा। इसलिए कंचन हो हासिल करने की योजना बनाकर वह उसके आसपास मंडराने लगा। बीस साल की कंचन कालू सिंह के मन की बात पढ़ चुकी थी। इसलिए कालू के मन की थाह लेने के लिए वह भी उसके नजदीक आने की कोशिश करने लगी जिससे दोनों कंचन के माता-पिता से नजरें बचाकर आपस में बात करने लगे। जिसके बाद एक रोज मौका मिलने पर कालू सिंह ने कंचन का हाथ थाम कर अपने दिल की बात कह दी।

कालू सिंह रईस किसान का बेटा है यह बात कंचन जानती थी। कालू की बनकर रहने से उसके सारे सपने पूरे हो सकते थे इसलिए जब कालू सिंह ने उससे शादी करने का वादा किया तो कंचन ने उसका प्यार स्वीकार कर लिया। दोनों तरफ से प्यार की हामी हो जाने के बाद भी उनका एकांत में मिलना मुश्किल था लेकिन कंचन जो ठान लेती थी वह करके मानती थी इसलिए वह माता-पिता की आंखों में धूल झोंककर खेत बने कमरे में कालू सिंह के साथ सुख में डूबने लगी। कालू सिंह कंचन की इस हिम्मत का कायल था लेकिन वह यह नहीं जानता था कि कंचन की यही हिम्मत एक रोज उसके गले की फांस बन जाएगी।

हुआ यह कि महीने डेढ़ महीने में ही खेतों का काम खत्म हो जाने से कंचन और कालू का मिलना-जुलना बंद हो गया। लेकिन कंचन को अपने कालू के संग की लत लग चुकी थी। वह एक दिन भी कालू से मिले बिना नहीं रह पाती थी इसलिए उसने गांव में ही रहने वाली अपने रिश्ते की एक हमउम्र बहन को अपने प्यार का राजदार बनाकर उसके फोन से कालू को मिलने का समय और स्थान बता देती जिससे कालू तय समय पर कंचन के गांव में तय जगह पहुंच जाता जहां दोनों प्रेमी अपने मन की आग बुझा कर अपने-अपने घर चले जाते। कंचन को फोन करने की दिक्कत न हो इसलिए कालू सिंह ने एक मोबाइल फोन कंचन को दे दिया जिससे घर वालों से छुपकर कंचन, कालू सिंह के साथ फोन पर नई दुनिया बसाने के सपने देखने लगी।

पुरुष के संपर्क में आने के बाद कंचन का रूप एकदम खिलने लगा यह देखकर उसकी अनुभवी मां को चिंता होने लगी। दूसरे कंचन के रोज-रोज अंधेरा घिरने पर अकेले बाहर जाने को लेकर वह पहले से ही चिंतित थी इसलिए कंचन पर नजर रखी जाने लगी जिससे जल्द ही कालू सिंह के साथ उसके संबंधो की जानकारी माता-पिता को लग गई। गरीब आदमी पैसों वालों से लड़ तो सकता नहीं था इसलिए अपनी इज्जत बचाने के लिए पिता ने भागदौड़ कर कंचन का रिश्ता एक युवक से तय कर दिया। इस बात की जानकारी कंचन को लगी तो उसने बड़ा फैसला कर 4 जून की आधी रात में कालूसिंह को फोन किया। उस समय कालू सिंह पास के ही एक गांव में हो रही शादी में मौजूद था। कंचन ने उसे बताया कि वह घर से भाग आई है और बाहर सड़क पर खड़ी है। इसलिए वो उसे लेने आ जाए। कंचन का कहना था कि दोनों भागकर कहीं दूर चलेंगे।

कालू सिंह शराब के नशे में था इसलिए उसने सोचा कि मौका अच्छा है वह कंचन के साथ मस्ती कर उसे समझा बुझा कर घर वापस भेज देगा। इसलिए वह रात में ही कंचन के गांव पहुंचा तो कंचन उसे गांव के बाहर खड़ी मिली। कालू ने उसे समझाने की कोशिश की लेकिन कंचन घर वापस जाने राजी नहीं हुई तो कालू मजबूर होकर उसे अपने खेत में बने टपरे में ले आया। जहां दोनों ने रात भर मस्ती की और सुबह कंचन को टपरी में छोड़कर कालू सिंह कंचन को लेकर भागने के लिए गाड़ी एवं पैसों का इंतजाम करने के नाम पर गांव आ गया। धीरे-धीरे तीन दिन हो गए। कंचन रोज कालू पर गांव छोड़ने का दबाव बनाने लगी जबकि कालू पैसों का इंतजाम नहीं कर पा रहा था। फिर भी उसने किसी तरह 6 जून का राजगढ़ जाकर एक किराये की गाड़ी वाले से बात कर उसे रात में चुपचाप गांव के बाहर गाड़ी लाने को कह दिया। गाड़ी वाले ने हामी तो भर दी लेकिन बाद में कानूनी चक्कर के डर से वह गाड़ी लेकर नहीं पहुंचा। इधर कालू के साथ गाड़ी का इंतजार कर रहीं कंचन ने जब देखा कि गाड़ी नहीं आई है तो वह इसे कालू की चाल समझी।

कालू सिंह ने पुलिस को बताया कि 7 जून की सुबह जब वह कंचन को टपरी पर छोड़कर गांव आ रहा था तो कंचन ने धमकी दी कि शाम को पैसे और गाड़ी का इंतजाम करके ही आना। अगर तुमने ऐसा नहीं किया तो मैं चुप नहीं बैठने वाली कल सुबह तुम्हारे साथ यही गांव में तुम्हारे घर में रहूंगी। कंचन की धमकी से कालू सिंह डर गया। रात में चुपचाप घर से कंचन खाना लेकर कालू खेत पर पहुंचा तो कंचन ने उससे फिर भागने की बात कही। इस पर कालू ने उससे झूठ बोल दिया कि दोनों इंतजाम हो गए है सुबह 4 बजे उसका एक दोस्त गाड़ी और पैसा लेकर आ जाएगा फिर हम दोनों दूर भाग चलेंगे। कंचन ने कालू की बात पर भरोसा कर उसे अपनी बाहों में भर लिया तो कालू भी प्यार का नाटक करने लगा और जब उसने देखा कि वासना की आग में कंचन मदहोश हो चुकी है तो उसने मौका देखकर वह खेतों पर बंधी रहने वाली भैंसों की दहलान से एक रस्सी लाकर प्यार करने के दौरान इस रस्सी से कंचन का गला दबाकर उसकी हत्या कर लाश को ले जाकर नाले में फेंक दिया।

कथा पुलिस सूत्रों पर आधारित।

दो रात में डेढ किलोमीटर ढोई लाश

जंगल में पड़े मिले कंचन के कपड़े व पुलिस गिरफ्त में आरोपी कालू।

कालू ने पुलिस को बताया कि हत्या करने के बाद वह घंटे भर तक शव के पास बैठा रहा। फिर अंधेरा गहराने पर कंचन की लाश को ठिकाने लगाने के लिए उसे कंधे पर लाद कर जंगल की तरफ ले गया। कालू ने लोगों से सुन रखा था कि मरने के बाद मुर्दा भारी हो जाता है। उस रोज उसने यह महसूस भी कर लिया। वैसे भी 20 साल की जवान स्वस्थ कंचन का वजन कम न था। इसलिए उसका शव एक तो बेहद भारी हो गया था दूसरे अंधेरी रात में ऊबड़ खाबड़ पहाड़ी पर चलने में कालू सिंह की सांस फूल रही थी। इसलिए वह चार घंटे में मुश्किल से एक किलोमीटर चलने के बाद लाश को एक सूनी जगह फेंक कर वापस आ गया। कालू सिंह ने बताया कि अगले दिन रात के समय वह ढेर सारी शराब पीकर मौके पर पहुंचा और लाश को एक बार फिर कंधे पर लादकर दूर फेंकने के लिए चल पड़ा लेकिन दूसरी रात वह केवल आधा किलोमीटर तक ही लाश को ले जा पाया। जिसके बाद नाला दिख जाने पर उसके पानी में कंचन का शव फेंककर वापस गांव आ गया।

कंचन की धमकी से डर गया था कालू

खेत की टपरी में जली अवस्था में कंचन की लाश व मौके पर जमा गांववालों की भीड़।

कालू ने पुलिस को बताया कि कंचन 4 जून की रात में उसके साथ भागकर आ गई थी। वह तीन दिनों तक मेरे साथ मेरे खेत में बनी टपरी में रही। इस दौरान वह उसे साथ लेकर भागने की ज़िद कर रही थी। जबकि मैं उसे पैसा और गाड़ी का इंतजाम करने की बात कहकर बहाने बना रहा था। सात जून को उसने धमकी दी कि अगर आज मैं उसे लेकर नहीं भागा तो वह चुप नहीं रहेगी। उसकी इस धमकी से डरकर मैंने उसकी हत्या कर दी।

पुलिस आने पर मौके पर मौजूद था कालू

हत्या के चार दिन बाद जब पुलिस ने कंचन का शव कंकाल के रूप में बरामद किया तब कालू सिंह गांव वालों के साथ मौके पर मौजूद था। इतना ही नहीं जब पुलिस ने लाश का पंचनामा बनाया तब कालू सिंह ने गवाह के रूप में दस्तखत भी किए थे। कंचन का केवल कंकाल मिला था यह देखकर कालू सिंह को भरोसा था कि पुलिस कंचन की पहचान कभी नहीं कर पाएगी।

CMYB

रहस्य रोमांच

रोमांचकारी भानगढ़ किले का रहस्य

भानगढ़ किला राजस्थान के अलवर जिले की अरावली पर्वतमाला में सरिस्का अभ्यारण्य की सीमा पर स्थित है। इस किले के पास गोला गांव बसा हुआ है। भानगढ़ का किला टलान वाले इलाके में पहाड़ियों के तल पर स्थित है, जो देखने में बेहद भयानक दिखता है। यह किला इसकी बनावट से ज्यादा इसके भूतिया किस्सों की वजह से चर्चा में रहता है।

राजकुमारी और रहस्यमयी किला

कहा जाता है-माधो सिंह नाम के एक राजा ने वहां रहने वाले बाला नाथ नाम के एक तपस्वी से खास अनुमति लेकर भानगढ़ किले का निर्माण किया। वो तपस्वी इस किले के निर्माण के लिए एक शर्त पर सहमत हुए कि इस किले की छाया तपस्वी के घर पर कभी नहीं पड़ना चाहिए। लेकिन जो किस्मत में लिखा था वो तो होना ही था। माधो सिंह के महत्वाकांक्षी उत्तराधिकारियों में से एक ने किले को ज्यादा ऊपर बढ़ा दिया जिससे किलें की छाया तपस्वी के घर पर पहुँच गई। इसके बाद साधू ने किले को श्राप दिया जिसके बाद भानगढ़ किला पूरी तरह से बर्बाद हो गया और भूतिया किला बन गया।

राजस्थान के अलवर जिले का भानगढ़ गाँव अपने ऐतिहासिक खंडहरों की वजह से जाना जाता है। भानगढ़ का किला चारों ओर से पहाड़ियों से घिरा है जिसके अन्दर प्रवेश करते ही कुछ हवेलियों के अवशेष दिखाई देते हैं। भानगढ़ का किला भारत के चर्चित प्रेतवाधित स्थानों में से एक है। भानगढ़, राजस्थान में अलवर जिले के राजगढ़ नगरपालिका में सरिस्का टाइगर रिजर्व के किनारे पर बसा हुआ है। किले में प्रवेश करते ही सामने बाजार है जिसमें सड़क के दोनों तरफ कतार में बनायी गयी दो मंजिली दुकानों के खण्डहर मौजूद हैं। भानगढ़ का किला अपने चारों ओर पहाड़ियों से घिरा हुआ है भानगढ़ को दुनिया के सबसे डरावनी जगहों में से एक माना जाता है ऐसा कहा जाता है कि यहां आज भी भूत रहते हैं। इसलिए सूर्य उदय होने से पहले और सूर्य अस्त के बाद किसी को भानगढ़ किले में रुकने की इजाजत नहीं है।

भानगढ़ किले का इतिहास सदियों पुराना है। राजस्थान में 17 वीं शताब्दी में बना हुआ यह किला प्राचीन कला का एक नमूना है। भानगढ़ किले को लेकर कहा जाता है कि आमेर के रजा भगवत दास ने इसे अपने छोटे बेटे माधो सिंह प्रथम के लिए 1573 में बनवाया था ।

अगर भानगढ़ किले के इतिहास के बारे में बात करें तो इससे दो अलग-अलग कहानी

राजपूत से बने मुस्लिम तो हुआ भानगढ़ का विनाश

भानगढ़ को लेकर कई किस्से मशहूर हैं। एक ऐसा ही किस्सा है कि भानगढ़ और अजबगढ़ का विनाश दो राजपूत सामंतों के मुसलमान बनने से हुआ। इतिहासकार प्रो. आर. एस. खंगारोत के अनुसार, राजपूत से मुसलमान बने मोहम्मद कुलीन और मोहम्मद दलहीज भानगढ़ और अजबगढ़ के शासक बने। इसी समय दिल्ली में मुगलों की ताकत को कमजोर देखकर जयसिंह द्वितीय ने भानगढ़ और अजबगढ़ पर हमला कर दिया। इतना ही नहीं, बल्कि मुसलमान बने दोनों राजाओं को मौत के घाट उतारकर इनके राज्यों को तहस-नहस करके खंडहरों में बदल दिया।

सामने निकल कर आती है, जिसकी वजह से भानगढ़ किले को इतना डरावना बताया जाता है। भानगढ़ के किले को लेकर एक दंतकथा, प्रचलित है कि माधो सिंह नाम के एक राजा ने वहां रहने वाले बाला नाथ नाम के एक तपस्वी से खास अनुमति लेकर भानगढ़ किले का निर्माण किया। वो तपस्वी इस किले के निर्माण के लिए एक शर्त पर सहमत हुए कि इस किले की छाया तपस्वी के घर पर कभी नहीं पड़ना चाहिए। लेकिन जो किस्मत में लिखा था वो तो होना ही था। माधो सिंह के महत्वाकांक्षी उत्तराधिकारियों में से एक ने किले को ज्यादा ऊपर बढ़ा दिया जिससे किलें की छाया तपस्वी के घर पर पहुँच गई। इसके बाद साधू ने किले को श्राप दिया जिसके बाद भानगढ़ किला पूरी तरह से बर्बाद हो गया और भूतिया किला बन गया।

इस किले के बारे में जो दूसरी कहानी बताई जाती है वो बहुत ही अजीब है। भानगढ़ किले के पीछे एक दूसरी दंतकथा यह है कि यह किला एक तांत्रिक के श्राप की वजह से पूरी तरह बर्बाद हो गया और भूतिया बन गया। बताया जाता है कि भानगढ़ के किले की राजकुमारी रत्नावती इस किले के सर्वनाश का कारण थी।

एक खूबसूरत रानी और तांत्रिक का श्राप

भानगढ़ के विनाश के और भी कई किस्से प्रचलित हैं. लेकिन सर्वाधिक चर्चित कहानी यह है कि इस राज्य में तांत्रिकों, साधुओं और च्योतिषियों को बेहद सम्मान हासिल था। महाराजा छतर सिंह की रानी रत्नावती तीतरबाड़ा की बेटी थी, वह बेहद रुपवती ती श्री ही तंत्र-मंत्र की विधाओं में भी पारंगत थी। कहा जाता है कि सिंघा नाम के एक तांत्रिक ने भानगढ़ के बारे में जब यह सुना कि यहां तांत्रिकों का सम्मान किया जाता है तो वह यहां पहुँच गया और महल के सामने स्थित एक पहाड़ी पर अपना स्थान बनाकर साधना करने लगा। जाने कैसे कभी उसने पहाड़ी से रानी को देख लिया और उसके सौन्दर्य पर मोहित हो गया। वह अच्छी तरह जानता था कि बिना तांत्रिक शक्तियों का प्रयोग किए रानी तक पहुंच पाना भी असंभव है। इसलिए तांत्रिक ने अपनी तांत्रिक विद्या के द्वारा ही रानी रत्नावती को वश में करने का फैसला किया। उसने कई बार छोटे-मोटे प्रयास किए, लेकिन वह सफल न हो सका। सिंघा को इस बात का रत्ती भर भी ज्ञान नहीं था कि रानी रत्नावती भी तंत्र विद्या की अच्छी जानकार है। रानी को हासिल न कर पाने की खीझ और कई विफल प्रयासों के बाद उसने अपना आखिरी दांव खेला। सिंघा ने रानी की एक दासी को अपनी कुटिल चाल का हिस्सा बनाया। यह दासी जब बाजार से राजमहल जा रही थी तो तांत्रिक ने अपने वशीकरण मंत्र से ब तेल का एक कटोरा उस दासी को यह समझाकर दिया कि हम तंत्रसिद्ध बाबा हैं, रानी की यह तेल देना और उन्हें यह समझाना कि इस तेल का उपयोग अपने शरीर पर करें, इससे उनका कल्याण होगा। राजमहल में पहुंचकर दासी ने तेल का कटोरा रानी के सामने रखा और रानी ने तेल की परखने के लिए उस पर अपना मंत्र डाला, तेल घूमने लगा, अपनी सिद्धि से स्वावती ने जान लिया कि तेल में वशीकरण के साथ ही मारक मंत्र व तंत्र का प्रयोग किया गया है। रानी की समझ आ गया कि तांत्रिक ने उसे अपने मोहपाश में बांधने के लिए ही यह तेल दासी के हाथ भिजवाया है। रानी के क्रोध की सीमा न रही और इसी गुस्से में उसने उसी समय अपने सामने रखी तेल की कटोरी पर सिद्ध मारक मंत्र पढ़कर वहीं से सामने वाली पहाड़ी पर फेंका, जहां बैठा वह तांत्रिक अनुष्ठान कर रहा था। तेल एक भयानक आवाज के साथ शिला के रूप में वहां से उड़ा और कहर बनकर तांत्रिक के ऊपर टूटा और सिंघा यहीं मृत्यु को प्राप्त हुआ।

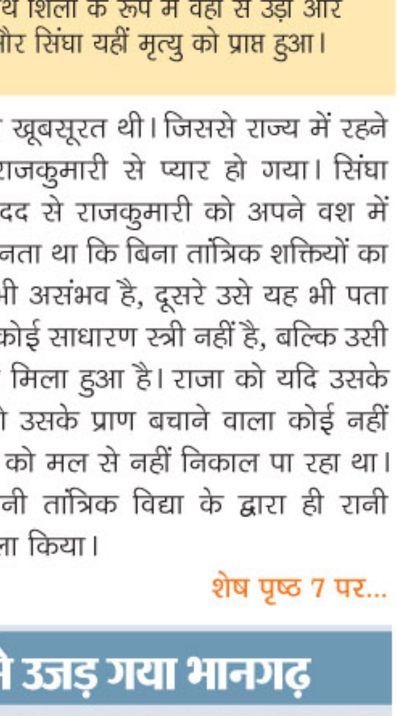

राजकुमारी रत्नावती दिखने में बहुत खूबसूरत थी। जिससे राज्य में रहने वाले सिंया नाम के तांत्रिक को राजकुमारी से प्यार हो गया। सिंघा तांत्रिक ने अपने काले जादू की मदद से राजकुमारी को अपने वश में करने का सोचा। वह अच्छी तरह जानता था कि बिना तांत्रिक शक्तियों का प्रयोग किए रानी तक पहुंच पाना भी असंभव है, दूसरे उसे यह भी पता था कि वह जिसे पाना चाहता है वह कोई साधारण स्त्री नहीं है, बल्कि उसी राज्य की रानी है, जहां उसे आश्रय मिला हुआ है। राजा को यदि उसके प्रयासों की भनक भी मिल गई तो उसके प्राण बचाने वाला कोई नहीं होगा। इस सबके बाद भी वह रानी को मल से नहीं निकाल पा रहा था। अंततः इस सेवड़ा तांत्रिक ने अपनी तांत्रिक विद्या के द्वारा ही रानी रत्नावती को वश में करने का फैसला किया।

शेष पृष्ठ 7 पर...

तांत्रिक के श्राप से उजड़ गया भानगढ़

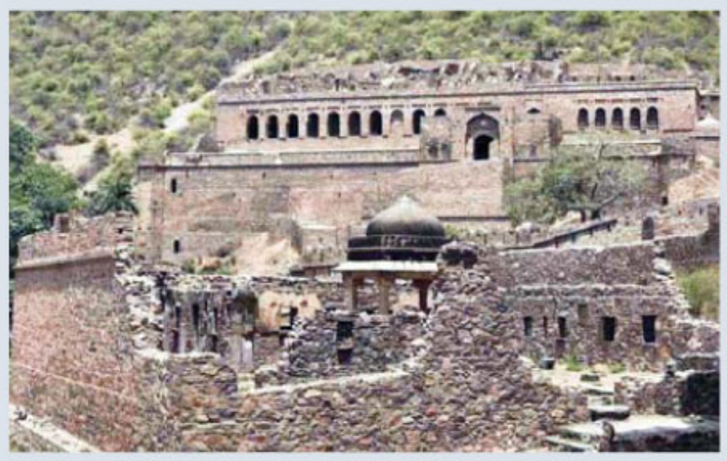

कहते हैं कि रानी की दीवानगी में मारा गया तांत्रिक सिंघा मरने से पहले वह श्राप दे गया कि मंदिरों को छोड़कर सारा भानगढ़ नष्ट हो जाएगा और सभी लोग मारे जाएंगे। इससे भानगढ़ के आसपास के गांवों के अनेक लोग मानते हैं कि तांत्रिक के श्राप के कारण ही किला सहित सभी इमारतें खंडहर हो गई, लेकिन मंदिरों का कुछ नहीं बिगड़ा। कुछ लोगों का विश्वास है कि इस श्राप से अकाल मृत्यु को प्राप्त हुए लोगों की आत्माएं आज भी यहां भटकती हैं और इस जगह के भुतहा होने व फिर से न बस पाने का यही कारण माना जाता है।

...पृष्ठ 8 का शेष

चूंकि दशरथ सुधा का पड़ोसी था इसलिए दिन में कई बाद उसका और सुधा का आमना सामना हो जाता था और जितनी बार भी वह सुधा को देखता उसका दिल सुधा से दोस्ती करने मचले उठता। पड़ोसी होने के नाते कभी कभार उसका सुधा के घर आना जाना भी हो जाता था। ऐसे में एक दो बार उसने सुधा से इशारे में अपने दिल की बात कही लेकिन जब सुधा की तरफ से कोई उत्तर नहीं मिला तो एक रोज उसने खुलकर सुधा से दोस्ती करने की बात कही लेकिन सुधा ने मना कर दिया।

इसके बाद वह अक्सर सुधा को अकेले में रोककर सीधे-सीधे संबंध बनाने के लिए कहने लगा। इससे सुधा ने डर के कारण घर से निकलना कम कर दिया। खासकर अकेले तो वह बाहर आती ही नहीं थी। इसी बीच सुधा की शादी कर दी गई तो दशरथ हाथ मलता रह गया।

समय के साथ दशरथ की भी शादी हो गई और वह दो बच्चों को पिता बन गया।

इधर कोई साल भर पहले जब सुधा को आठ महीने का गर्भ था वह प्रसूति के लिए अपने मायके आ गई जहां दस महीने पहले उसने एक बच्ची को जन्म दिया। तब से सुधा मायके में ही थी। यह देखकर दशरथ फिर सुधा को पाने का प्रयास करने लगा।

लेकिन सुधा से उसे घास नहीं डाली तो दशरथ ने हर हाल में सुधा से संबंध बनाने की ठान ली। इसके लिए उसने योजना बनाकर 17 अगस्त की रात सुधा की बेटी का अपहरण कर लिया। उसका सोचना था कि जैसे ही सुधा को इस बात का पता चलेगा वह पड़ोसी होने के नाते बच्ची को खोजने के बहाने सुधा को रात में गांव के बाहर ले जाएगा जहां उससे बच्ची के बदले संबंध बनाने का सौदा कर लेगा और सुधा नहीं मानी तो उसके साथ बलात्कार करेगा लेकिन वह सुधा को हासिल किए बिना नहीं मानेगा।

आरोपी ने बताया कि वह बच्ची को लेकर बाहर आया तो वो रोने लगी जिससे उसने बच्ची का मुंह बंद कर दिया। इस दौरान उसकी सांस रुक जाने से मौत हो गई तो उसने डर कर लाश कुएं में फेंक दी और हल्ला हो जाने पर गांव वालों के साथ बच्ची को खोजने का नाटक करने लगा।

कथा पुलिस सूत्रों पर आधारित।

आरोपी सुरेश मीना।

...पृष्ठ 3 का शेष

2017 में अपने गांव से एमपीपीएससी की तैयारी करने आलोक उर्फ अजय मुरैना ने ग्वालियर कोचिंग लेने आया था। उस समय वह ग्वालियर में किराये का मकान लेकर

अकेला रहता था।

जिस कोचिंग में आलोक पढ़ता था उसी कोचिंग में दुर्गा उर्फ मुस्कान भी पीएससी के लिए कोचिंग ले रही थी। एक साथ पढ़ाई के दौरान आलोक, मुस्कान की सुंदरता का दीवाना हो गया तो मुस्कान भी आलोक से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकी। चूंकि दोनों की प्रशासनिक अधिकारी बनना चाहते थे इसलिए उनके जीवन का लक्ष्य एक है यह सोचकर दोनों एक दूसरे के करीब आते गए। जिससे उनके बीच प्रेम संबंध स्थापित हो जाने के बाद मुस्कान की दोपहर अक्सर आलोक के साथ उसके कमरे में कटने लगी। लेकिन उनके प्रेम को जल्द ही कोविड का ग्रहण लग गया। कोविड में सब कुछ बंद हो जाने से आलोक को वापस अपने घर जाना पड़ा और यहां 2021 में मुस्कान के परिवार वालों ने उसकी शादी अन्य युवक से कर दी। तो 2022 में आलोक ने भी एक दूसरी युवती से शादी कर ली।

लेकिन शादी के कुछ समय बाद ही मुस्कान ने अपने पति से तलाक ले लिया। तो दूसरी तरफ काम की तलाश में पत्नी को अपने घर पर छोड़कर आलोक ग्वालियर आ गया। यहां जब उसे मालूम चला कि मुस्कान तलाक के बाद अकेली मायके में रह रही है तो दोनों क एकांत में मिलना फिर पहले की तरह शुरू हो गया।

चूंकि अब दोनों शादीशुदा थे इसलिए एक दूसरे से दूरी बर्दास्त नहीं कर पा रहे थे इसलिए 2023 में आलोक और मुस्कान ने चुपचाप कोर्ट मैरिज कर ली और पड़ाव के साकेत नगर में किराये का कमरा लेकर रहने लगे।

आलोक के घर में रह रही पहली पत्नी को इस बात की भनक भी नहीं थी कि ग्वालियर में आलोक उसकी सौत के साथ रह रहा है। चूंकि गांव में आलोक की पत्नी घर वालों के साथ रहती थी इसलिए उसका खर्च तो न के बराबर था लेकिन यहां प्रेमी के साथ विवाह कर रह रही मुस्कान बिंदास लाइफ जीने के फेर में आलोक को लेकर रोज घूमने जाने की जिद करने लगी। कभी वह मूवी चलने का कहती तो कभी होटल में डिनर करने। आलोक की कमाई अधिक नहीं थी लेकिन मुस्कान बड़े पिता की बेटी थी इसलिए घूमना फिरना मूवी देखना और बाहर खाना खाने का शौक उसे पहले से ही था। इसलिए शादी के बाद वह आलोक के साथ रोमांटिक लाइफ बिताने की कोशिश में बेहद खर्चीली जिंदगी जी रही थी। आलोक शुरू में तो उसका खर्च उठाता रहा लेकिन जल्द ही सीमित आय के कारण उसकी जेब जबाव देने लगी।

परेशान होकर उसने एक दो बार मुस्कान को खर्च कम करने का इशारा किया तो मुस्कान भड़क गई उसने साफ कह दिया कि शादी की है तो केवल तन की नहीं मन की खुशी भी देना ही होगी। मुस्कान की इस बात से वह परेशान हो गया क्योंकि जहां मुस्कान दिन भर में ही दो-चार हजार रुपया खर्च करवा देती थी वहीं गांव में रहने वाली पहली पत्नी के लिए वह महीने भर में पांच हजार भी नहीं दे पाता था। इसलिए तंग आकर उसने मुस्कान ने छुटकारा पाने की ठान ली।

इसके लिए उसने अपने तीन दोस्तों को ढाई लाख रुपए की सुपारी देकर इस काम के लिए राजी कर लिया जिन्होंने योजना अनुसार 13 अगस्त को उस समय मुस्कान को कार से रौंद दिया जब वह भाई के साथ एक्टिवा पर बैठकर मंदिर से वापस आ रही थी। पुलिस शक न करे इसलिए योजना अनुसार आलोक दूसरी मोटर साइकल पर साथ चल रहा था। उसने पुलिस को एक्सीडेंट की बात बताई थी लेकिन पुलिस ने जल्द ही सच्चाई का पता लगा लिया।

कथा पुलिस सूत्रों पर आधारित।

...पृष्ठ 6 का शेष

उसने कई बार छोटे-मोटे प्रयास किए, लेकिन वह सफल न हो सका। अपनी लगातार असफलताओं के कारण रानी को पा लेने की इच्छा उसके मन में बदला लेने की हद तक बढ़ती जा रही थी। दूसरी ओर सिंघा को इस बात का रत्ती भर भी ज्ञान नहीं था कि रानी रत्नावती भी तंत्र विद्या की अच्छी जानकार है। यह बात न मालूम होने के कारण ही तांत्रिक अंत में वह भूल कर बैठा, जिसके कारण न केवल वह अपनी मृत्यु का, बल्कि भानगढ़ के

विनाश का भी कारण बना। हुआ यह कि रानी को हासिल न कर पाने की खीझ और कई विफल प्रयासों के बाद उसने अपना आखिरी दांव खेला। सिंघा ने रानी की एक दासी को अपनी कुटिल चाल का हिस्सा बनाया। यह दासी जब बाजार से राजमहल जा रही थी तो तांत्रिक ने अपने वशीकरण मंत्र से बंधे तेला का एक कटोरा उस दासी को यह समझाकर दिया कि हम तंत्रसिद्ध बाबा हैं, रानी को यह तेल देना और उन्हें यह समझाना कि इस तेल का उपयोग अपने शरीर पर करें. इससे उनका कल्याण होगा। राजमहल में पहुंचकर दासी ने तेल का कटोरा रानी के सामने रखा और जो भी घटित हुआ था वह रानी को बताया, साथ ही उस तांत्रिक बाबा का हुलिया भी बयान किया। रानी ने तेल को परखने के लिए उस पर अपना मंत्र डाला, जिससे तेल घूमने लगा, अपनी सिद्धि से रानी ने जान लिया कि तेल में वशीकरण के साथ ही मारक मंत्र व तंत्र का प्रयोग किया गया है। रानी को समझ आ गया कि तांत्रिक ने उसे अपने मोहपाश में बांधने के लिए है होल दासी के हाथ भिजवाता है। रानी के क्रोध की सीमा न रही और इसी गुस्से में उसने उसी समय अपने सामने रखी तेल की कटोरी पर सिद्ध मारक मंत्र पढ़कर वहीं से सामने वाली पहाड़ी पर फेंका, जहां बैठा ज़ वह तात्रिक अनुष्ठान कर रहा था। तेल एक भयानक आवाज के साथ शिला के रूप में वहां से उड़ा और कहर बनकर तांत्रिक के ऊपर टूटा और सिंघा वहीं मृत्यु को प्राप्त हुआ। बताते हैं कि मरने से पहले तांत्रिक ने भानगढ़ ज़ किले को श्राप दिया कि कोई भी वहां नहीं रह पायेगा। तभी से भानगढ़ का किला उजाड़ पड़ा है। इतना ही नहीं सूर्यास्त के बाद या सूर्योदय से पहले किले में प्रवेश करने की अनुमति नहीं है। किले के भूतिया किस्सों की वजह से इस किले में रात के समय किसी को भी प्रवेश नहीं करने दिया जाता। भानगढ़ के किले के बारे में बताया जाता है कि इस किले में रात के समय भूत का साया होता है, यहां पर रात में आत्माएं घूमती हैं और कई अजीब आवाजें भी यहां सुनाई देती हैं। भानगढ़ किले को लेकर यह भी कहा जाता है कि जो कोई भी रात में किले में प्रवेश करता है, वह सुबह वापस नहीं लौट पाता। रात के समय में यहां होने वाली अलौकिक घटनाओं के कारण ही भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण द्वारा लगाए गए एक बोर्ड ने यहां आने वाले पर्यटकों को अंधेरे केसमय किले के परिसर के भीतर न जाने की चेतावनी दी है।

●●●

रतलाम

मां से संबंध बनाने के लिए पड़ोसी युवक ने कर दी दस माह की बच्ची की हत्या

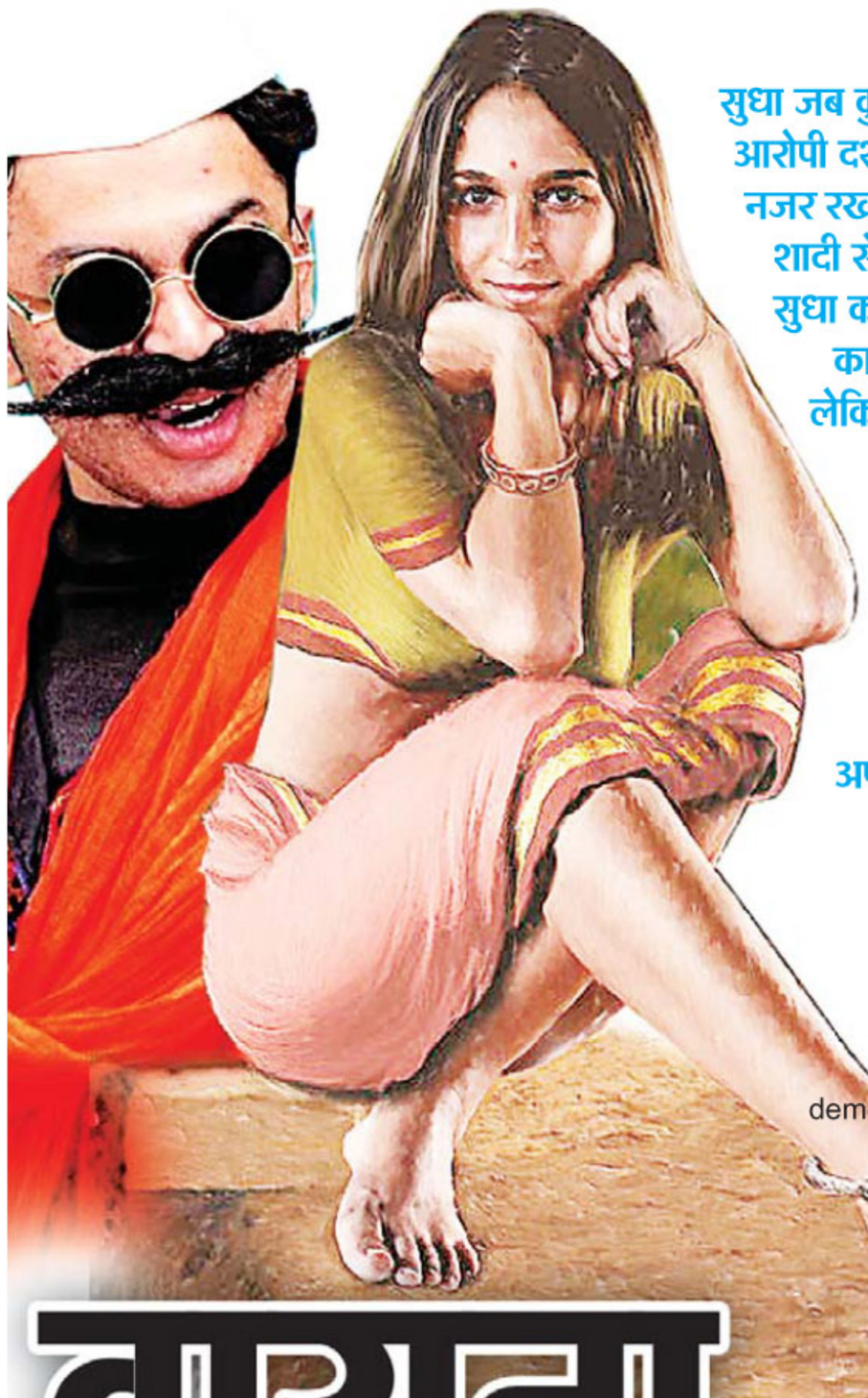

demo pic.

सुधा जब कुंवारी थी तभी से आरोपी दशरथ उस पर बुरी नजर रखता था। सुधा की शादी से पहले दशरथ ने सुधा को राजी करने का काफी प्रयास किया लेकिन सफलता नहीं मिली। इसलिए शादी के बाद आरोपी ने सुधा को राजी करने उसकी दस माह की बेटी का अपहरण कर लिया और...

वासना का पुजारी

आरोपी की योजना बेटी को खोजने के लिए सुधा के घर से बाहर निकलते ही उसके संग बलात्कार करने की थी। लेकिन ऐन मौके पर मासूम के रोने के कारण जब उसे अपनी योजना असफल होते दिखी तो वासना के पुजारी ने मासूम की हत्या कर शव कुएं में फेंक दिया।

17 अगस्त की रात के कोई 12 बजे का वक्त था जब रतलाम के कालूखेड़ा इलाके रसूलिया गांव में रहने वाली युवती सुधा की नींद टूटने पर वह बिस्तर पर अपनी मासूम को न पाकर चौंक का उठ बैठी।

दरअसल रात में सोने के बाद लगभग हर दो घंटे में सुधा की नींद खुद व खुद बच्ची को स्तनपान कराने के लिए टूट जाती थी। उस रोज भी हमेशा की तरह जब 12 बजे के आसपास नींद टूटने पर उसने अपनी चोली को एक तरफ से ऊपर की ओर हटाकर पास में सोई बच्ची को नजदीक लाने हाथ बढ़ाया तो बिस्तर खाली देखकर उसका कलेजा मुंह को आ गया।

घटना के विरोध में एकजुट हुआ अखिल भारतीय क्षत्रिय समाज ज्ञापन देकर की जांच की मांग।

बच्ची शायद सोते समय पलंग से नीचे गिर गई है यह सोचकर उसने लाइट जलाकर पलंग की नीचे झांका लेकिन बच्ची वहां नहीं थी। कहते हैं बच्चा गुमता है तो आदमी घड़े में भी हाथ डालकर उसे खोजता है। कुछ ऐसी ही हालत सुधा की थी इसलिए उसने अपना तकिया हटाकर उसके नीचे भी बच्ची को तलाशा लेकिन जब उसे भरोसा हो गया कि उसकी मासूम बिटिया कमरे में नहीं है तो उसने चीख कर पास के कमरे में सो रही अपनी मां को आवाज दी।

थोड़ी ही देर में गांव की बेटी सुधा (बदला नाम) की मासूम बिटिया के अचानक गायब हो जाने की खबर गांव में फैलने से लोग लाठी-टार्च लेकर आ गए। गांव में इससे पहले कभी जंगली जानवरों को आतंक नहीं रहा। इसलिए इस बात की संभावना तो कम ही थी कि सुधा की बिटिया को कोई जानवर ले गया है। फिर कमरे के अंदर घुसकर जानवर आता भी कैसे।

पूरी रात बिटिया का पता न चलने पर सुबह थाने में मासूम के अपहरण का मामला दर्ज होते ही एसपी राहुल लोढा ने एसडीओपी जावरा शक्ति सिंह के नेतृत्व में एक टीम मासूम की खोज में गठित कर दी गई।

आरोपी की तलाश में स्निफर डॉग को गांव लाया गया जो सुधा के घर से तीन किलोमीटर दूर एक मकान तक गया जहां शराब बेची जाती थी। इसलिए पुलिस ने उस रात वहां शराब पीने आने वाले हर व्यक्ति से पूछताछ की। इनमें सुधा का पड़ोसी युवक दशरथ कटारिया भी शामिल था जो रात से ही गांव वालों के साथ बच्ची की तलाश में जुटा था।

गांव के अन्य युवकों से भी पूछताछ की गई लेकिन कहीं से कोई सुराग पुलिस को नहीं मिला। इस बीच बेटी के लापता हो जाने की खबर पाकर उपरबाड़ा से सुधा का पति भी रसूलिया आकर बेटी की खोज में लग गया।

तो दूसरी तरफ सुधा की समाज के लोगों ने प्रदर्शन कर बच्ची को जल्द से जल्द खोजने और आरोपी को गिरफ्तार करने की मांग को लेकर जुलूस निकालते हुए मुख्यमंत्री के नाम कलेक्टर को ज्ञापन सौंपा। जिससे पुलिस पूरी दमखम से बच्ची की तलाश में जुट गई।

इस दौरान पुलिस ने सुधा से ककई बार पूछताछ कर सुराग तलाशने का प्रयास किया। दरअसल पुलिस की जानकारी में अब तक यह बात आ चुकी थी कि सुधा बेहद सुंदर है इसलिए गांव के कई युवकों द्वारा उससे नजदीकी हासिल करने की कोशिश समय समय पर की जाती रही थी। लेकिन सुधा सीधी सच्ची युवती थी इसलिए उसके सामने किसी की दाल नहीं गली थी। पूछताछ में सुधा ने महिला पुलिस को बताया कि उसे सबसे अधिक परेशान उसका पड़ोसी युवक दशरथ कटारिया करता था जो अक्सर मौका लगते ही सुधा के सामने गलत प्रस्ताव कई बार रख चुका था। सुधा से ही पुलिस को पता चला कि दशरथ, सुधा की शादी से पहले भी उसके साथ दोस्ती करने की कोशिश करता रहा था।

स्निफर डॉग जिस मकान तक गया था वहां दशरथ का काफी आना जाना था और घटना की रात भी दशरथ वहां गया था। पुलिस उससे पूछताछ कर चुकी थी लेकिन जब यह बात सामने आई कि दशरथ सुधा पर दोस्ती करने के लिए दबाव बनाता रहता था। पुलिस ने एक बार फिर दशरथ को थाने तलब करने गांव में पुलिसकर्मी भेजा तो पता चला कि दशरथ गांव से अचानक लापता हो चुका था। इस पर पहले उसकी बहन के घर मंदसौर में छापामारी की गई बाद में दशरथ की मौजूदगी राजस्थान के प्रतापगढ़ में थाना हथुनिया के बरोठा गांव में होने की जानकारी लगने पर राजस्थान पुलिस की मदद से उसे बरौठा स्थित उसकी ससुराल के खेत में बनी झोपड़ी से गिरफ्तार कर लिया गया।

घटना का खुलासा करते पुलिस अधिकारी।

पूछताछ के दौरान पहले तो दशरथ भोला बनने की कोशिश करता रहा लेकिन जब पुलिस ने उससे सख्ती की तो दशरथ ने चौंकाने वाला खुलासा करते हुए बताया कि उसने घटना की रात में ही बच्ची की हत्या कर शव को पास के खेत में बने कुएं में फेंक दिया था। इस पर पुलिस ने गांव ले जाकर दशरथ की निशानदेही पर कुएं से मासूम का शव बरामद कर पीएम के बाद उसे परिजनों को सौंप दिया। दशरथ ने मासूम का अपहरण कर उसकी हत्या क्यों की इस पर दशरथ ने बताया कि दरअसल वह सुधा के साथ संबंध बनाना चाहता था लेकिन सुधा राजी नहीं होती थी। इसलिए उसने बच्ची का अपहरण कर सुधा पर दबाव बनाकर उसके संग संबंध बनाने की योजना बनाई थी। लेकिन जब वह बच्ची का उठाकर बाहर आया तो बच्ची रोने लगी इसलिए उसने डरकर बच्ची का मुंह बंद कर दिया जिससे दम घुटने से उसकी मौत हों जाने पर उसने बच्ची को कुएं में फेंक दिया। इसी बीच गांव में सुधा की बेटी के लापता हो जाने की खबर फैलने पर वह भी गांव वालों के साथ मिलकर बच्ची को खोजने का नाटक करने लगा लेकिन जब खोजी कुत्ता के आने के बाद पुलिस ने उससे पूछताछ की तो वह डरकर गांव से भाग गया था। पुलिस ने आरोपी को अदालत में पेश किया जहां से उसे जेल भेज देने के बाद यह कहानी इस प्रकार सामने आई।

सुधा और दशरथ बचपन से ही पड़ोसी रहे है। दोनों लगभग हमउम्र हैं इसलिए उनका बचपन साथ खेलते हुए बीता। लेकिन किशोर उम्र में आते ही सुधा के शरीर में बदलाव की शुरूआत हुई तो मां से उसके घर से बाहर निकलने और लड़कों के संग खेलने पर बंदिश लगा दी।

इधर समय के साथ सुधा की खूबसूरती निखरी तो गांव का हर एक युवक उससे दोस्ती करने परेशान रहने लगा। शेष पृष्ठ 7 पर...

बच्ची के बदले बलात्कार की थी योजना

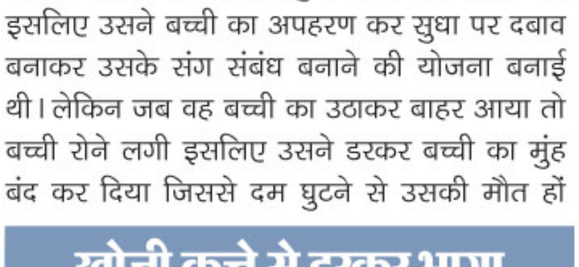

पुलिस गिरफ्त में आरोपी।

आरोपी ने माना कि सुधा जैसे ही बच्ची को खोजने घर से बाहर आती उसकी योजना रात में सुधा के साथ बच्ची खोजने के बहाने उसे गांव के बाहर ले जाकर बलात्कार करने की थी। उसने माना कि वह सुधा से संबंध बनाने का सपना तभी से देखता आ रहा था जब सुधा किशोर उम्र में थी। इसके लिए उसने कई बार सुधा से कहा भी लेकिन सुधा ने उसकी बात नहीं मानी। जिससे उसने बलात्कार करने का मन बना लिया था।

खोजी कुत्ते से डरकर भागा

आरोपी ने बताया कि जब खोजी कुत्ता आने के बाद पुलिस ने उसे बुलाकर पूछताछ की तो वह डर गया था। उसे लगा कि वो पकड़ा जाएगा इसलिए दो दिन बाद अपनी ससुराल राजस्थान भाग गया था।